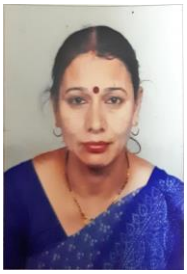

सुहानी भोर

कली कली है आज तो जागी
सुरम्य प्रसून की भोर है आयी
वसन्त का तो छाया उत्सव
चिड़ियों ने मचाया कलरव
काली निशा की घोर निराशा

रवि तो आया ले कर आशा
वसंत ऋतु का हुआ आगमन
पल्लवित हो गये नूतन पात
पुष्प पुष्प हैं विभिन्न रंग के

उनके ऊपर चित्र पतंगे
दिनकर जागा सुबह हुई
जागी प्रमुदित होकर वसुधा
हुआ प्रभात अब जागा मधुवन

बंसी बज रही अब तो कानन
जीवन में भर गया आलोक
अब ना करो किसी का शोक
वसंत तो हमको सदा सिखायें
वर्तमान जी कर अब तो दिखाये

चित्रा चतुर्वेदी